अथवा

छापा-तिलक तज दीन्ही रे, तो से नैना मिला के।

प्रेम बटी का मदवा पिलाके

मतवारी कर दीन्ही रे, मो से नैना मिला के।

खुसरो निज़ाम पै बलि-बलि जडए,

मोहे सुहागन कीन्ही रे, मोसे नैना मिला के। (भाषा-सौंदर्य)

[This question paper contains 6 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4058 **C**

Unique Paper Code : 12051102

Name of the Paper : हिंदी कविता (आदिकालीन एवं भक्तिकालीन काव्य)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) HINDI – CBCS**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. 'अमीर ख़ुसरों लोकमन के चितेरे कवि हैं।' विवेचन कीजिए ।

अथवा

विद्यापति की सौंदर्य-चेतना पर प्रकाश डालिए । (12)

2. कबीर की सामाजिक-चेतना को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

मंझन रचित 'मधुमालती' के काव्य-शिल्प का विश्लेषण कीजिए। (12)

3. सूरदास के वात्सल्य-वर्णन का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

अथवा

मीरा की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए। (12)

4. कवितावली के काव्य-सौंदर्य पर चर्चा कीजिए।

अथवा

तुलसीदास कृत कवितावली की काव्य-भाषा का विश्लेषण कीजिए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) काहे को ब्याही विदेस रे, लखि बाबुल मोरे।

हम तो बाबुल तोरे बागों की कोयल कुहकत घर-घर जाऊं,
लखि बाबुल मोरे।

हम तो बाबुल तोरे खेतों की चिड़िया, चुग्गा चुगत उड़ि जाऊं,
लखि बाबुल मोरे।

यह मथुरा कंचन की नगरी, मनि मुक्ताहल जाहीं।

जबहिं सुरति आवति वा सुख की, जिय उमगत तन नाहीं।

अनगन भाँति करी बहु लीला, जसुदा नंद निबाहीं।

सूरदास प्रभु रहै मौन ह्वै, यह कहि कहि पछिताहीं ।।

(भाव सौंदर्य)

अथवा

मुखपंकज, कंजबिलोचन मंजु, मनोज-सरासन-सी बनी भौहैं।

कमनीय कलेवर, कोमल स्यामल-गौर किसोर, जटा सिर सोहैं।।

तुलसी कटि तून, धरे धनु-बान, अचानक दिष्टि परी तिरछोहैं।

केहि भाँति कहाँ सजनी! तोहिं सों, मृदु मूरति द्वै निवर्सी मन मोहैं। (रूप वर्णन)

(ख) काहे री नलनी तू कुमिलांनी। तेरे हीं नालि सरोवर पांनीं ।।

जल मैं उतपति जल मैं बासं जल मैं नलनीं तोर निवास ।।

ना तलि तपति न ऊपरी आगि। तोर हेतु कहु कासनि लागि ।।

कहैं कबीर जे उदिक समांन। ते नहीं मूए हंमारे जान ।।

(प्रतीकात्मकता)

हम तो बाबुल तोरे बेले की कलियाँ, जो मांगे चली जाऊं, लखि बाबुल मोरे ।

हम तो बाबुल तोरे खूंटे की गड्या, जित हांको हंक जाऊं, लखि बाबुल मोरे ।

अथवा

ए सखि पेखलि एक अपरूप। सुनइत मानब सपन-सरूप ।।

कमल गुजल पर चाँदक माला। ता पर उपजल तरुन तमाला ।।

ता पर बेढ़लि बिजुरि-लता। कालिंदी-तट घिरें-घिरें जाता ।।

सखा-सिखर सुधाकर पाँति। ताहि नब पल्लब अरुनिम कांति ।।

बिमल बिंबफल गुजल बिकास। तापर कीर थीर करु बास ।।

तापर चंचल खंजन-जोर। तापर साँपिनि झाँपल मोर ।।

ए सखि-रंगिनि, कहल निसान। हेरइत पुनि मोर हरल गिआन ।।

कवि विद्यापति एह रस भान। सुपुरुख-मरम तोहें भत्र जान ।।

(8)

(ख) अधर अमिअ रस भरे सोहाए। पेम बरें हुत रगत तिसाए।

अति सुरंग कोंवल रस भरे। जानहु बिंब मयंकम धरे।

पटतर लाइ न जाहिं बखाने। जानु ससि अमी गारि बिधि साने।

अधर अमीरस भरे अपीऊ। कुंवर जान मोर डोलहिं जीऊ।

वह सो घरी विधि कब दरसाइहि। जब यह जिउ मोरे घट आइहि।

अनल बरन दुइ अधर सोहागिनि जगत सुधानिधि जान।

अचिजु जो अंब्रित अगिनि सेउं देखत जरहिं परान ।।

अथवा

पग बाँध घूँघरयाँ णाच्याँ री ।।

लोग कहयाँ मीरा बावरी, सासु कह्याँ कुलनासी री।

विख रो प्यालो राणा भेज्याँ, पीवाँ मीरा हाँसाँ री।

तण मण वारयाँ परि चरिणाम्माँ दरसण अमरित प्यासाँ री ।

मीरा रे प्रभु गिरधर नागर, थारी सरणाँ आस्याँ री ।। (7)

6. निम्नलिखित पदयांशों में दिए गए निर्देश के अनुसार **किन्हीं दो** का रचना-कौशल विश्लेषित कीजिए : (6×2=12)

(क) ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।

हंस सुता की सुंदर कगरी, अरु कुंजनि की छाहीं।

वै सुरभी, वै बच्छ दोहनी, खरिक दुहावन जाहीं।

ग्बाल-बाल मिलि करत कुलाहल, नाचत गहि गहि बाहीं।